शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिन्दी की चुनिन्दा कहानियों में किन्नर विमर्श

विजयश्री तू. सातपालकर (शोधार्थी)
पार्वतीबाई चौगुले कला एवं विज्ञान (स्वायत्त) महाविद्यालय
मडगाँव, गोवा, भारत

शोध संक्षेप

आज का समय हिंदी साहित्य में विमर्शों से भरा हुआ है। साहित्य की अनके विधाओं में इन विमर्शों को अभिव्यक्ति मिली है। स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श के साथ आज साहित्य में किन्नर विमर्श पर भी गंभीर साहित्य सृजन हो रहा है। किन्नरों को तीसरे लिंग के अंतर्गत रखा गया है किन्तु मनुष्य होने के बावजूद उनके साथ जानवरों जैसा बर्ताव किया जाता है। एक समय वह था जब लोग किन्नरों के बारे में बात करना पसंद नहीं करते थी, लेकिन आज उन पर चर्चा हो रही है। साहित्य के माध्यम से उनकी पीड़ा को समाज के सामने लाने का प्रयास हो रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिन्दी की कुछ कहानियों के माध्यम से किन्नरों की दशा, पीड़ा एवं दुखद स्थिति को उजागर किया गया है।

प्रस्तावना

इस धरती पर मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। मानव को लिंग के आधार पर दो वर्गों में विभाजित किया गया है, पुरुष और स्त्री। इन दो वर्गों को छोड़कर एक तीसरा वर्ग भी है जिसे हाशिये पर रखा गया है। वह तीसरा वर्ग किन्नरों का है। भारत में इन किन्नरों को अलग नामों से जाना जाता है। तेलुगू में नपुंसकुडु कोज्जा या मादा, तमिल में थिरु नंगई, अरावनी, गुजराती में पवैय, पंजाबी में खुसरा, कन्नड में जोगप्पा एवं इसी प्रकार भारत के विभिन्न क्षेत्रों में छक्का, खोजा, किन्नर, हिजड़ा, नपुंसक, थर्ड जेंडर, ट्रान्सजेंडर इत्यादि शब्द भी किन्नरों के लिए प्रयोग किए जाते हैं।"1

पौराणिक ग्रन्थों में किन्नरों का उल्लेख मिलता है। वाल्मीकि कृत रामायण के उत्तरकाण्ड में वर्णित राजा प्रजापति कर्दम के पुत्र इल की कथा के माध्यम से किन्नरों की उत्पत्ति के मिथकीय प्रमाण मिलते हैं।"2

महाभारत में किन्नर के रूप में शिखंडी तथा बृहनल्ला (अर्जुन) का उल्लेख मिलता है। पुराणों को छोडकर मध्यकाल में भी किन्नरों को देखा जा सकता है। किन्नरों का संबंध राज महलों से था। रानियों की देखभाल के लिए विशेष रूप से सिर्फ किन्नरों को ही नियुक्त किया जाता था। खिलजी वंश के शासक अल्लाउद्दीन खिलजी के हरम में भी किंपुरुष एवं किंपुरुषियाँ होती थीं। उन्हें खोजा एवं कलीब नाम से संबोधित किया जाता था।"3

इससे यह पता चलता है कि पौराणिक काल से किन्नरों का इतिहास समृद्ध रहा है, किन्तु आज उन्हें उपेक्षा कि दृष्टि से देखा जाता है। देवताओं के साथ उनका भी उल्लेख किया जाता है। जब समाज की संरचना में उच्च एवं निम्न वर्ग की संकल्पना थी, उस उस दौर में भी किन्नरों का संबंध उच्च वर्ग के साथ देखने को मिलता है।"4

बहुत से आंदोलनों के माध्यम से किन्नर समुदाय को मुख्यधारा में लाने का प्रयास हो रहा है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सरकार ने क़ानून बनाकर उन्हें कुछ अधिकार दिए हैं। परिवार में अगर कोई शारीरिक रूप से विकलांग पैदा होता है तो उसकी देखभाल परिवारवाले करते हैं, किन्तु परिवार में किन्नर बच्चा पैदा हो तो उसे दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर हो जाता है। सरकार ने तीसरे लिंग के रूप में उन्हें दर्जा और अधिकार भी दिए हैं, किन्तु समाज उन्हें महत्व नहीं देता। किन्नर वर्ग समाज की मुख्य धारा में आज भी सम्मिलित नहीं हो पाया है। इस बहिष्कृत थर्ड जेंडर समाज पर अभी चिंतन हो रहा है और साहित्य के माध्यम से लोगों तक पहुंचाया जा रहा है। हिन्दी भाषा की लगभग सभी विधाओं में किन्नरों पर आधारित रचनाएँ लिखी जा रही हैं। किन्नर विमर्श पर कहानियाँ भी लिखी जा रही हैं।

हिंदी कहानियों में किन्नर विमर्श

किन्नर विमर्श की कहानियों में 'बिंदा महाराज' एक महत्वपूर्ण कहानी है। इस कहानी का मुख्य पात्र बिंदा न तो स्त्री है और न ही पुरुष है, वह किन्नर है। एक किन्नर के जीवन में किस प्रकार से घटनाएँ घटित होती हैं, उसे इस कहानी में दर्शाया है। शिवप्रसाद जी ने किन्नरों के दुख-दर्द, संताप, मोह, अंधविश्वास, उनकी विडम्बना आदि को उजागर किया है। बिंदा के माध्यम से पिता द्वारा तिरस्कार, पति का सुख, पत्नी की प्रतीक्षा, बेटा-बेटी का मोह आदि से वंचित होने की मानसिक पीड़ा को कहानी में दर्शाया है। लोगों की अवहेलना को स्वीकार करते हुए बिंदा अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करता दिखाई देता है।

इसी तरह श्रीकृष्ण सैनी की 'हिजड़ा' एक हृदयस्पर्शी कहानी है। इस कहानी में किन्नरों की व्यथा, विवशता, करुणा ममत्व को दर्शाया है। इस कहानी में राघव और निर्मला की बस दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है। राघव के दूर के रिश्ते का भाई राघव के घर पर तो कब्जा कर लेता है, किन्तु उनके तीन-चार साल के लड़के सुनील की ज़िम्मेदारी नहीं लेता। निर्मला का रज़िया के साथ आत्मीयता का रिश्ता था। रज़िया एक किन्नर थी। सुनील को देखकर रज़िया का ममत्व जाग उठता है। सुनील की ज़िम्मेदारी रज़िया लेती है। सुनील पढ़-लिखकर बड़ा अफसर बन जाता है। लोगों की निंदा से सुनील को बचाने के लिए रज़िया सुनील से दूर रहकर अपनी पहचान छिपाती है। यहाँ तक कि अपना खून देकर सुनील की जान भी बचाती है। अंत में जब रज़िया को खुद की पहचान बताने का समय आता है तब वह समाज के डर से कहती है, "अरे छोड़ो मुझे, मैं नहीं जाऊँगी उसके पास.... इतना बड़ा अफसर है मेरा बेटा और जब लोग यह जानेंगे कि मैंने उसे पाला है तो क्या कहेंगे लोग।"5

किन्नर विमर्श के संदर्भ में पूनम पाठक की कहानी 'किन्नर' महत्वपूर्ण कहानी है। बस में बैठे किन्नर के बगल में मानसी बैठना नहीं चाहती, इसलिए वह कंडक्टर से दूसरी सीट मांगती है। दूसरी सीट न मिलने के कारण वह खड़ी रहती है। बस में बैठे लड़के उसके साथ बदतमीजी करने लगते हैं। तब वही किन्नर आगे आकर उसकी रक्षा करता है। बाकी के लोग मानसी की मदद करना तो दूर और उस किन्नर की प्रशंसा करने के बजाय किन्नर को ही अपमानित करते हुए कहते हैं, "अरे यह तो हिजड़ा है।"6 इस प्रकार किन्नरों के प्रति सामाजिक धारणा और किन्नरों में मानवीय संवेदना का यथार्थ अंकन इस कहानी में चित्रित हुआ है।

किन्नर विमर्श की एक उत्कृष्ट कहानी अंजना वर्मा द्वारा लिखित 'कौन तार से बीनी चदरिया' है। यह कहानी संबंधों के धरातल पर भावुक

करने वाली कहानी है। इस कहानी में किन्नरों की भावुकता, विवशता, समाज की प्रताड़ना को दर्शाया है। इस कहानी के पात्र सुंदरी और कुसुम किन्नर हैं। किन्नर होने के कारण उनका कोई परिवार नहीं है। दोनों नाच-गाकर ही अपना जीवन चलाते हैं। सुंदरी का परिवार है, किन्तु किन्नर होने के कारण उसे अपने परिवार से दूर होना पड़ा। वह अपने परिवार वालों की याद में पल-पल तड़पती रहती है। किन्तु कुसुम को अपने माता-पिता के बारे में कुछ नहीं पता। वह कहती है, "तुमको तो उहो मालूम कि तुम्हारा जनमभूमि कहा है, मतारी-बाप कौन है, हमें तो ओहु नय पता। हम तो जानते ही नहीं कि कौन हमरा माय-बाप है।"7

सुंदरी अपने किन्नर होने पर दुखी होकर कहती है, "ओह सबके दुनिया अलग है, अउर हमर सबके दुनिया अलग। हाथ-पैर, मुँह-कान मानुस के समान होके भी हम मानुस में नहीं गिनाते हैं। ऐसे अच्छा होता कि हम कौनो जानवर जाति में जनम लेते।"8 समाज ने हमेशा किन्नरों को हाशिये पर रखा है। उनके साथ अनुचित व्यवहार किया जाता है। इस पर सुंदरी का कहना है। "फिर हमें सबसे अलग क्यों रखा गया जैसे अछूत हैं हम, रास्ते में सब देखिकै हँस देते है, का हम हँसने की चीज है।"9

कहानीकार किन्नरों के जरिये यह प्रश्न समाज से पूछ रही हैं। सुंदरी अपने ही घर एक अजनबी की भांति जाती है। अपनों को देखने के लिए उसकी आँखें तरस जाती हैं। इस प्रकार से इस कहानी में किन्नरों के दुख और समाज का किन्नरों के प्रति दोयम दर्जे के व्यवहार को भी देखा जा सकता है।

किन्नर विमर्श की कहानियों में किरण सिंह की कहानी 'संझा' उल्लेखनीय कहानी है। यह एक लंबी कहानी होने के साथ ही किन्नरों की यतनाओं को बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से व्यक्त करती है। संझा एक किन्नर होने के साथ ही अपने माता-पिता की इकलौती संतान है। उनके गाँव में किन्नरों को हेय दृष्टि से देखा जाता है। किन्नरों के बारे में संझा को बताते हुए वैद्यजी कहते हैं, "वे लोग कपड़े उठा कर नाचते हैं और भीख माँगते हैं। लोग उन्हें गालियाँ देते हैं, थूकते हैं, उनके मुँह पर दरवाजा बंद कर लेते हैं, उन्हें घेर कर मारते हैं। वे जिस इलाके में बसे हों, वहाँ कोई भी अपराध हो, इन पर ही इलजाम लगता है।"10

इससे किन्नरों पर होने वाले अत्याचारों का पता चलता है। मनुष्य अपनी मनुष्यता को परे रखकर जानवर की भांति एक मनुष्य पर ही अत्याचार करता है क्योंकि सिर्फ इसलिए कि वह किन्नर है। संझा को किन्नरों के हवाले न करना पड़े, इसीलिए वैद्यजी संझा को सबकी नजरों से बचाकर रखते हैं। संझा अपने शरीर को लेकर बहुत जिज्ञासु है। स्वयं का शरीर बाकी औरतों से भिन्न है, यह समझने में उसे समय लगता है। इस कहानी में अद्भुत तरीके से संझा के मनोविज्ञान को उकेरा है। वैद्यजी की बेटी होने के कारण संझा भी लोगों को औषधि देती थी। लेकिन जब संझा का किन्नर होने का भेद खुलता है तो वही लोग उसके खून के प्यासे हो जाते हैं। संझा का गुनहगार ससुर कहता है, "उसने मेरे देवथान को अपवित्तर किया है। इसको नग्न करके इसका बाल मुंड दो। मुँह पर कालिख पोथ कर पूरे गाँव में मारते हुए घुमाओ।'11 अंत में संघर्ष करते हुए संझा अस्मिता स्थापित करने में सफल हो जाती है। इस कहानी में किन्नरों की यातनाओं के साथ ही स्त्रियों के शोषण को भी सामने लाने का प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार कहा जा सकता है कि सरकार ने किन्नरों के लिए अधिकार तो दे दिए किन्तु समाज उन्हें उन अधिकारों का उपयोग करने नहीं दे रहा। अगर कोई बच्चा किन्नर बनकर जन्म लेता है तो उसका उसमें कोई दोष न होते हुए भी परिवार से दूर रहकर नारकीय जीवन जीने के लिए विवश किया जाता है। खुद का परिवार होते हुए भी उन्हें लोगों के सामने हाथ फैलाकर अपना उदरनिर्वाह करना पड़ता है। समाज को किन्नरों को तृतीय लिंग के रूप में स्वीकार करना होगा। साहित्य के माध्यम से लोगों को जागरूक करना अनिवार्य है। तमाम प्रताड़णा, पीड़ा, घृणा के बावजूद किन्नर समाज मुख्यधारा में शामिल होने के लिए जद्दोजहद कर रहा है। इसीलिए उनकी मदद करना हमारा भी कर्तव्य है।

संदर्भ ग्रंथ

1 कपिल कुमार गौतम, शोध धारा, पृष्ठ 5
2 कपिल कुमार गौतम, शोध धारा, पृष्ठ 6
3 कपिल कुमार गौतम, शोध धारा, पृष्ठ 8
4 कपिल कुमार गौतम, शोध धारा, पृष्ठ 9
5 हिजड़ा, श्रीकृष्ण सैनी, त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका, जनवरी-मार्च 2017, पृष्ठ 124
6 किन्नर, पूनम पाठक, वांग्मय, त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका, जनवरी-मार्च 2017, पृष्ठ 149
7 कौन तार से बीनी चदरिया, अंजना वर्मा, त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका, पृष्ठ 101
8 कौन तार से बीनी चदरिया, अंजना वर्मा, त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका, पृष्ठ 101
9 कौन तार से बीनी चदरिया, अंजना वर्मा, त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका, पृष्ठ 101
10 संझा, किरण सिंह हंस पत्रिका 2012
11 संझा, किरण सिंह हंस पत्रिका 2012